...ज और संत के बी... लोक कल्या... हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है।

संत श्री ...रामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

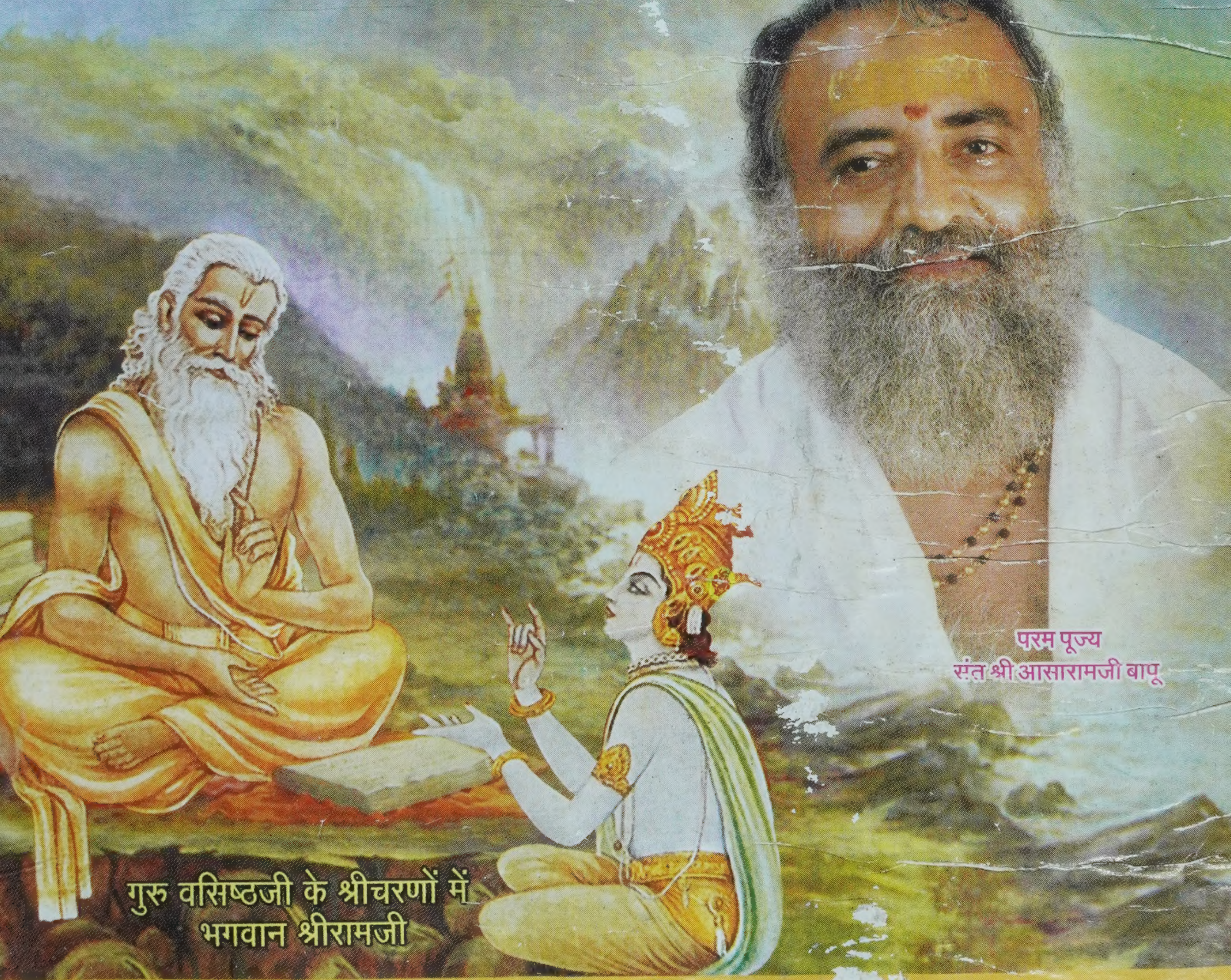
मूल्य : रु. ३/-

लोक कल्याण सेतु

...ंक : १२५ | १६ नवम्बर से १५ दिसम्बर २००७

मासिक समाचार पत्र

...ी जीव हैं वे धन को पाप में लगाते,
... आरोग्य से विषयों का सेवन करते हैं और
... अवस्था में भी सुकृत नहीं करते,
... करते हैं। जो पुण्यवान हैं वे इन्हें
...ी प्राप्ति में लगाते हैं अर्थात् धन से
...क शुभकर्म और आरोग्य से परमार्थ साधते
... यौवन अवस्था में भी शुभ कर्म करते हैं।



गुरु वसिष्ठजी के श्रीचरणों में
भगवान श्रीरामजी

परम पूज्य
संत श्री आसारामजी बापू

...ामजी ! तीन पदार्थ बड़े अनर्थ और परम सार के कारण हैं – धन, आरोग्य ... यौवन अवस्था।





सुल्तानपुर (उ.प्र.) में लगी बाल संस्कार प्रदर्शनी तथा भूपाल सागर, जि. चित्तौड़गढ़ (राज.) में 'युवाधन सुरक्षा अभियान' के तहत आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यार्थी।





जीवन का सर्वांगीण विकास करनेवाली कुंजियाँ सीखती बालाघाट (म.प्र.) की छात्राएँ तथा सूर्यदेव को अर्घ्य प्रदान करती हदगाँव, जि. नांदेड़ (महा.) की छात्राएँ।





शारीरिक, मानसिक उन्नति के साथ आध्यात्मिक उन्नति के लिए जप में तल्लीन औरंगाबाद (महा.) के छात्र तथा ध्यान की गहराइयों में तल्लीन बाँदा (उ.प्र.) की छात्राएँ।





प्रेरक मार्गदर्शन के बाद चिरमिरी, जि. कोरिया (छ.ग.) के विद्यार्थियों में सत्साहित्य का वितरण तथा पूज्य बापूजी द्वारा बताये गये 'देव-मानव हास्य प्रयोग' करते जि. सम्बलपुर (उड़ीसा) के नौनिहाल।

लोक कल्याण सेतु

वर्ष : ११
अंक : १२५
मूल्य : रु. ३/-

१६ नवम्बर से १५ दिसम्बर ०७

सदस्यता शुल्क :

भारत में : (१) पंचवार्षिक : रु. १००/- (२) आजीवन : रु. ३००/-

विदेशों मे : (१) पंचवार्षिक : US $ 50 (२) आजीवन : US $ 125

कार्यालय **'लोक कल्याण सेतु'**
संत श्री आसारामजी आश्रम,
संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, अमदावाद-५.
फोन : (०७९) ३९८७७७३९, ६६११५७३९, २७५०५०१०-११.
e-mail : ashramindia@ashram.org web-site : www.ashram.org
Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

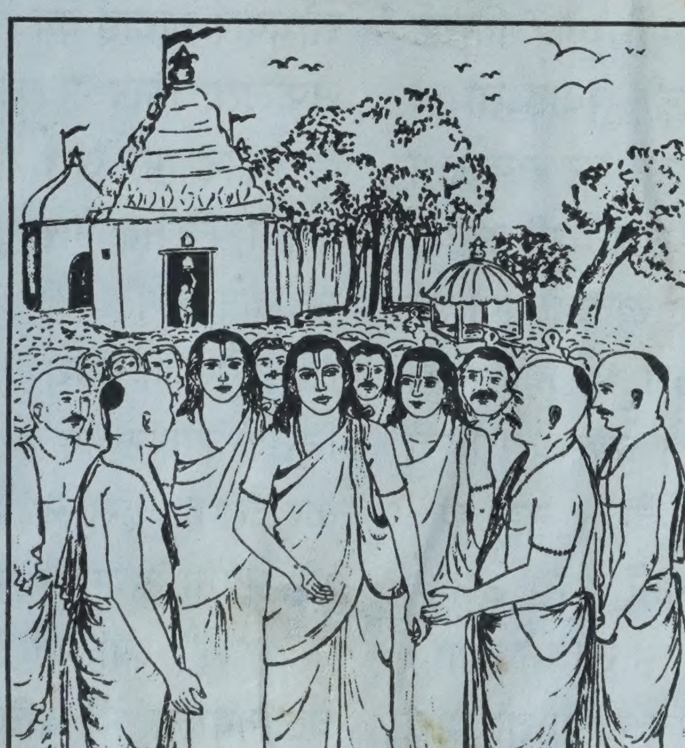
स्वामी : अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति
काशक और मुद्रक : निलेश पटेल
काशन-स्थल : अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग,
ोटेरा, जि. गाँधीनगर (गुज.)। पोस्ट : साबरमती-३८०००५.
ुद्रण-स्थल : हार्दिक वेबप्रिंट, राणीप और विनय प्रिंटिंग प्रेस, अमदावाद।
म्पादक : सि.ना. अग्रवाल

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ
त्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्र. और सदस्यता क्र. अवश्य लिखें।

अनुक्रम

संत भ्रमण क्यों करते हैं ?

पंढ़रपुर में आषाढ़ और कार्तिक कृष्णपक्ष ी एकादशी को प्राचीनकाल से ही विशाल मेला गता है, जिसमें देश-शान्तर से बड़ी संख्या में ोग आते हैं। लोगों को धर्म सच्चे स्वरूप से परिचित राने का सहज-सुलभ वसर जानकर ज्ञानेश्वरजी ी इस मेले में गये। दूर-दूर आये श्रद्धालुओं ने उनके ान्निध्य का लाभ उठाया। छ विरोधियों ने पूछा : आप महान संत और ज्ञानी , फिर आपको इधर-उधर टकते फिरने की क्या रूरत है ?''



ज्ञानेश्वरजी ने कहा : ''लोगों के दुःख से यथित होकर उनकी पीड़ा दूर करने का यत्न रना यह मेरा साधनाकाल से चला आ रहा धर्म है। साधनाकाल के ये संस्कार आत्मानुभव की प्राप्ति के बाद सहज स्वभाव बनकर मुझे जगह-जगह घूमकर लोगों को ज्ञान का मार्ग दिखाने में प्रवृत्त कर रहे हैं।

कुआँ प्यासे के पास नहीं जाता, इसलिए उसका जल सीमित दायरे में ही रह जाता है परंतु सरिता दूर-दूर तक के सूखे क्षेत्रों को हरा-भरा बनाने निकल पड़ती है तो अपने संग में आनेवाली छोटी-छोटी जलधाराओं एवं तुच्छ नालों को भी अणु से विभु, क्षुद्र से महान बनाते हुए विशाल सागर तक की यात्रा करा देती है।''

संत-महापुरुषों का लोकहित का स्वभाव उनके द्वारा साधनाकाल में की हुई महानता की यात्रा का प्रतीक होता है। (शेष पृष्ठ १३ पर)

धीरज सबका मित्र है, करी कमाई मत खो

अफ्रीका में खनिज उत्खनन विभाग के कुछ विशेषज्ञ भूमि का सर्वेक्षण कर रहे थे। एक स्थान पर उनका एक सदस्य सहसा रुक गया। उसका चेहरा प्रसन्नता से चमक रहा था। वह जोर-से चिल्लाया : 'मिल गया-मिल गया, इस जगह सोने का विशाल भंडार है!'

उस ऊबड़-खाबड़ पठारीय भूमि में खुदाई शुरू कर दी गयी। कभी रेतीली परतें मिलतीं तो कभी फौलादी चट्टानों के मोटे-मोटे स्तर परंतु खुदाई का काम अनवरत चालू रहा। वर्ष-पर-वर्ष बीतने लगे। सोने का नामोनिशान न मिला। खदान के मालिक के मन में निराशा जन्म लेने लगी। उसे आशंका हुई, 'यदि यहाँ सोना न निकला तो मेरा सारा परिश्रम और पैसे यूँ ही व्यर्थ चले जायेंगे।' निराश होकर उसने वह जमीन दूसरे को बेच दी।

दूसरे व्यक्ति को आशा की कुछ किरण दिखायी दी। उसने सोचा इतनी खुदाई तो हो चुकी है। थोड़ी और खुदाई करने पर सफलता जरूर मिलेगी। इसी आशा से उसने भी खुदाई शुरू करा दी। कई महीनों तक खुदाई लगातार चलती रही। सोने का एक कण भी हाथ नहीं लगा। उसके सारे पैसे खत्म हो चुके थे। बिना पैसे के मजदूर काम करने को तैयार नहीं थे। मशीन हटाने के लिए भी पैसे नहीं बचे। उसका भी उत्साह ढीला पड़ने लगा। वह सोचने लगा : 'इस बंजर भूमि की खुदाई करते रहना तो व्यर्थ है। मैंने व्यर्थ ही इसे खरीदा।'

वह व्यक्ति भी मशीनसहित जमीन बेचने के लिए ग्राहक ढूँढ़ने लगा। एक इंजीनियर ने वह जमीन खरीद ली। इंजीनियर बड़ा ही बुद्धिमान और धैर्यशाली था। उसने भूमि का भलीभाँति परीक्षण किया। मिट्टी के नमूने की बारीकी से जाँच की। उसके सभी परीक्षण वहाँ स्वर्ण-भंडार होने का स्पष्ट संकेत दे रहे थे।

'दूसरे असफल हुए तो क्या हुआ, मैं प्रयत्न करूँगा। मुझे स्वर्ण-भंडार अवश्य मिलेगा।'- इस विश्वास के साथ उसने आगे की खुदाई का काम शुरू कराया। अभी एक फुट ही खुदाई हुई थी कि सोने के कण मिलने प्रारंभ हो गये।

वह इंजीनियर अपनी उत्तम निर्णयक्षमता, दृढ़ इच्छाशक्ति व अपार उत्साह के बल पर अपनी मंजिल पाने में सफल हो गया। उसे सोने का एक विशाल भंडार प्राप्त हुआ। जमीन बेचनेवाला निराश न होता, एक फुट और खुदाई करता तो उसे स्वर्ण-भंडार मिल जाता।

यदि वह इंजीनियर भी दूसरों की तरह सोचकर खुदाई का निर्णय न लेता तो क्या उसे सफलता मिल सकती थी ? नहीं। कठिनाइयों के पहाड़ भी उस व्यक्ति को कभी नहीं रोक सकते, जिसके पास दृढ़ इच्छाशक्ति और मजबूत मनोबल हो।

निराशा स्वयं का सबसे बड़ा अपमान है। निराश होकर हम ही अपना बड़ा भारी अपमान कर देते हैं। इसलिए यह पक्का करें कि हम कभी भी अपना अपमान नहीं करेंगे।

गाड़ी बढ़िया होनी चाहिए पर गाड़ी चलानेवाला भी बढ़िया होना चाहिए, नहीं तो बढ़िया गाड़ी को भी खराब कर देगा या दुर्घटना कर देगा। इसी प्रकार मनुष्य-शरीररूपी बढ़िया गाड़ी तो मिली ही है, उसमें अब ऊर्जा (शक्ति) से भरी हुई सकारात्मक सोच और ईश्वर आराधना

सत्संगरूपी चिन्तामणि से समस्त सारभूत ज्ञानवस्तु प्राप्त होती है।

से साहस व सहायता पाता हुआ इस लोक में सफल और अंतरात्मा में विश्रांति व ऐहिक सफलता के साथ आत्मा-परमात्मा में प्रीति, नित्य नवीन रस पाना चाहिए।

खुदाई से प्राप्त स्वर्ण व स्वर्ण से प्राप्त वस्तु तो छूट जाती है, फिर भी जो न छूटे वह अछूट परमात्मा ही चैतन्य है, शाश्वत है। शरीर के बूढ़े, पुराने होने पर भी तुम नित्य नवीन चैतन्य रहते हो। अपने उस आत्मवैभव को पा लो। करो दृढ़ संकल्प उस महावैभव को पाने के लिए। बाह्य धन, बाह्य मशीन की आवश्यकता नहीं; तुम्हारी पुकार, तुम्हारा सुमिरन, सत्पुरुष की कृपा व सत्संग पर्याप्त है पर्याप्त ! धरती के सारे स्वर्ण-भंडार, रत्न-भंडार इस भंडार के आगे कोई मायना नहीं रखते। ऐसे आत्म-भंडार को पाने की योग्यता रखनेवाला मानव क्यों समय व्यर्थ खो रहा है ? किसकी बाट जोह रहा है ?

लग जाओ लाल ! लालियाँ ! फिर जहाँ-तहाँ रहेंगी दीवालियाँ !!

सप्तधान्य उबटन

सात प्रकार के धान्य (गेहूँ, जौ, चावल, चना, मूँग, उड़द और तिल) समान मात्रा में लेकर पाउडर बना लें। सुबह स्नान करने के समय थोड़ा-सा पानी में घोल लें। शरीर पर थोड़ा पानी डालकर शरीरशुद्धि के बाद घोल को पहले ललाट पर लगायें, फिर थोड़ा सिर पर, कंठ पर, छाती पर, नाभि पर, दोनों भुजाओं पर, जाँघों पर तथा पैरों पर लगाकर स्नान करें। ग्रहदशा खराब हो या चित्त विक्षिप्त रहता हो तो उपर्युक्त मिश्रण से स्नान करने पर बहुत लाभ होता है तथा पुण्य व आरोग्य की प्राप्ति भी होती है।



पूज्य बापूजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री एच.डी. देवे गौड़ा।

'श्री गुरुग्रंथ साहिब' के सुवाक्य

१. तब लगु प्रानी तिसै सरेवहु जब लगु घट महि सासा।

हे मनुष्य ! जब तक तेरे शरीर में श्वास आता-जाता है, तब तक उस परमात्मा की सेवा कर। **(गु.ग्रं.सा. : ३.स्री कबीर जीउ. ४.२)**

२. कलि कलेस मिटे हरि नाइ।

हरि का नाम लेने से सब प्रकार के दुःखों, कष्टों का नाश होता है।

(गु.ग्रं.सा. : ३. गोंड म. ५.१२.१०.१)

३. गुर के चरन रिदै उरिधारे। अगनि सागर ते उतरे पारे।

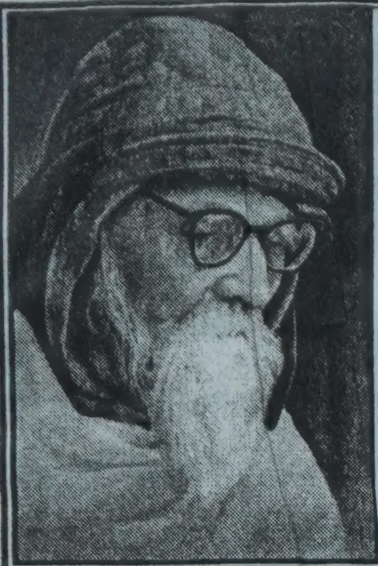
गुरु के चरणों को हृदय में धारण करो। इससे संसार के अग्नि-सागर से पार उतर जाओगे।

(गु.ग्रं. सा. : ३. गोंड म. ५.१२.१०.२)

आचारवान् सदा पूतः सदैवाचारवान् सुखी।
आचारवान् सदा धन्यः सत्यं सत्यं च नारद॥

आचारवान मनुष्य सदा पवित्र, सदा सुखी और सदा ही धन्य है- यह सत्य है, सत्य है। (देवी भागवत : ११.२४.१८)

ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों का समागम भयों का अपहरण करनेवाला है।





सर्वांग सुंदर ग्रंथ : 'गीता'

मैं मानता हूँ कि 'गीता' एक निर्विवाद आत्मानुभव का ग्रंथ है, जिसमें सभी विचारों का सामंजस्य सधा हुआ है। अनेक भाषाओं के अपने व्यापक अध्ययन में मैंने ऐसा दूसरा ग्रंथ देखा ही नहीं।

'गीता' निष्कामता का पाठ पढ़ाती है। वह 'निष्कामता-ग्रंथ' है, जीवन का मंत्र है। समर्थ रामदास कहते हैं - **'सकामासी नावडे गीता'** अर्थात् कामना रखनेवाले को 'गीता' पसंद ही नहीं पड़ती। सचमुच वह ऐसा ही अद्भुत ग्रंथ है। अपना जीवन निष्काम बनाना ही गीता का लक्ष्य है।

'भगवद्गीता' एक जीवन-ग्रंथ है। वह मात्र शब्दशास्त्र नहीं है। इसलिए उसके अनुकूल ही अपना जीवन बनाना चाहिए। जैसे कोई चित्रकार चित्र बनाता है तो सभी अंग-प्रत्यंगों में समता रखता है और सर्वांग सुंदर चित्र बनाता है। जहाँ-जहाँ उसे सुंदरता मिलती है, वहाँ-वहाँ से सुंदरता लेकर वह चित्र में इकट्ठा करता - सबको चित्र में जोड़ देता है, तब वह चित्र सर्वांग सुंदर बनता है। 'गीता' में भी ऐसा ही हुआ है। उपनिषद् से ज्ञान, योगशास्त्र से समत्वबुद्धि, भक्तिमार्ग से भक्ति, वेद से ध्यान, सांख्य-न्यायशास्त्र से सृष्टि-विषयक विज्ञान और स्मृतिकारों से आचार भी लिया। अनुभवियों से जो अनुभव मिला, उसे भी ले लिया।

'ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे' - ब्रह्मविद्या की बुनियाद पर 'गीता' में योगशास्त्र का मकान खड़ा किया गया है। भक्ति, ज्ञान और कर्म की दीवारें बनायी गयी हैं एवं उस मकान के शिखर पर भगवत्-शरणागति का कलश चढ़ाया गया कि 'सब छोड़ अंत में मेरी शरण आ जा।' इस तरह यह एक सर्वांग सुंदर मंदिर खड़ा किया गया है, जिसके आश्रय में हम सदैव सुख से रह सकते हैं।

'गीता' विश्वव्यापक धर्म और विश्वव्यापक विचार का ग्रंथ है। उसके शब्द अत्यंत व्यापक हैं। वे बच्चों के भी काम आते हैं और बूढ़ों के भी। इस दुनिया के भी काम के हैं और उस दुनिया के भी। वे संसार में काम करनेवाले लोगों के उपयुक्त हैं और मोक्षपरायण निवृत्त मनुष्य के भी उपयुक्त हैं। वह ग्रंथ सुख में मदद पहुँचाता है और दुःख में भी। प्रतिक्षण राह दिखाता है और किसी पर आक्रमण नहीं करता। जिसकी जैसी मनोदशा हो, उसीके अनुरूप उन्नतिकारक बोध उसे उस ग्रंथ से मिलता है, इसलिए सबको उसका अध्ययन करना चाहिए। - विनोबा भावे

भवरोग की औषधि

जिस प्रकार मरीज या रोगी को तीन बातें करनी पड़ती हैं- एक कुपथ्य टालना, दूसरी पथ्य के अनुसार खाना और तीसरी दवाई लेना, वैसे ही भवरोगी को भी तीन बातें करनी पड़ती हैं- एक दुःसंगति, अनाचार, मिथ्याभाषण, द्वेष, मत्सर आदि अवगुणों का त्याग करना, दूसरी सत्संगति, सद्ग्रंथ-सेवन, सद्विचार, सदाचार का आचरण करना एवं तीसरी सबसे महत्त्वपूर्ण बात- नामस्मरण करना, यही औषधि-सेवन है।

ध्यान ही पूजा की सामग्री और स्वयं पूजन-क्रिया है।

राजा की फौज बड़ी या फकीर की मौज ?



मुगल शासक अकबर के काल की घटना है। आगरा के शाहगंज में एक बगीचा था, जिसमें उदयनाथ नाम के एक योगसिद्ध महापुरुष रहते थे। उनके सान्निध्य में घटित होनेवाले चमत्कारों की बातें दूर-दूर तक फैल गयीं। उन्हें सुनकर एक बार अकबर ने उनके पास संदेशा भिजवाया कि वह उनके दीदार करना चाहता है, वे उसके महल में आ जायें। महापुरुष बोले : ''यदि बादशाह को मिलने की इच्छा है तो वह स्वयं ही यहाँ आये।''

हाथी पर सवार होकर अकबर बड़े तामझाम के साथ उनसे मिलने चल दिया। अकबर के वहाँ पहुँचने से पूर्व उसके दरबारी बादशाह के आने की सूचना देने उन महापुरुष के पास पहुँचे। महापुरुष सड़क के किनारे दीवाल पर बैठे थे।

दरबारी ने कहा : ''ऐ बाबा ! बादशाह आ रहे हैं। उनसे मिलने के लिए नीचे आ जाओ।''

महापुरुष ने जवाब दिया : ''मैं बादशाह की परवाह नहीं करता।''

दरबारी ने कहा : ''दीवार बादशाह तक चलकर नहीं जायेगी, नीचे आ जाओ।''

महापुरुष ने देखा कि बादशाह व उसके दरबारियों के घमंड का घड़ा अब भर गया है। ये शासक लोग फौज के बल पर, सत्ता के बल पर जनता को उत्पीड़ित कर रहे हैं। अब इन्हें फकीर की मौज का बल दिखाना चाहिए।

लोगों ने देखा कि दीवाल अपने स्थान से चल पड़ी है। अकबर के दरबारी, वहाँ उपस्थित सभी लोग तथा स्वयं अकबर भी चकित होकर कुछ क्षण देखते ही रह गये। महापुरुष अकबर के सामने थे और अकबर के मुँह से शब्द नहीं फूट पा रहे थे।

आखिर हिम्मत जुटाकर वह हाथी से नीचे उतरा और बोला : ''ऐ औलिया ! मैं शर्मिंदा हूँ। मेरी खुशी की खातिर आपको जो चाहिए वह माँग लीजिये।''

अष्टसिद्धियाँ, नवनिधियाँ जिनकी दासी हैं; देवता, यक्ष, किन्नर एवं गंधर्व भी अपना भाग्य जगाने के लिए जिनकी सेवा का अवसर खोजते रहते हैं, ऐसे महापुरुष को अकबर जैसे तुच्छ सम्राट से क्या माँगने की इच्छा होगी ? वे सिद्धपुरुष स्वयं ही शाहों के शाह थे।

महापुरुष के इनकार करने पर अकबर चुपचाप अपने राजमहल की ओर लौटा। उस दिन उसका सत्ता व वैभव का घमंड चूर-चूर हो गया था।

भगवान शिवजी माता पार्वती से कहते हैं :

नित्यं ब्रह्मरसं पीत्वा तृप्तो यः परमात्मनि।
इन्द्रं च मन्यते रंकं नृपाणां तत्र का कथा ॥

'हमेशा ब्रह्मरस का पान करके जो परमात्मा में तृप्त हो गया है, वह (मुनि) इंद्र को भी गरीब मानता है तो राजाओं की तो बात ही क्या ?'

शारीरिक स्वास्थ्य, मनोबल और बुद्धि का सत्त्व इन तीनों से सम्पन्न मनुष्य भोग और मोक्ष पा लेता है। - परम पूज्य बापूजी

शुक्रनीति

(गतांक से आगे)

गुरुजनों के तथा राजा के आगे उनसे ऊँचे आसन पर या पैर के ऊपर पैर रखकर नहीं बैठना चाहिए और उनके वाक्यों का तर्क द्वारा खण्डन नहीं करना चाहिए। दान, मान और सेवा से अत्यंत पूज्यों की सदा पूजा करें।

पाप करनेवाला व्यक्ति यह समझता है कि कोई पाप करते हुए मुझको नहीं देख रहा है किंतु यह ठीक नहीं है क्योंकि उसे देवता एवं उसकी अंतरात्मा देखते रहते हैं।

आत्मा ही अपना साक्षी है और आत्मा ही अपनी गति है। इसलिए मनुष्यों के उत्तम साक्षी इस अपने आत्मा का तुम तिरस्कार मत करो।

प्रत्येक अक्षर मंत्ररूप है, कोई भी जड़ी-बूटी ऐसी नहीं है जो औषध न हो, कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है जो किसी भी कार्य के योग्य न हो। हाँ, इन सबको यथोचित रीति से कार्यों में लगानेवाला पुरुष ही दुर्लभ है।

नीति का मूल विनय है और विनय शास्त्रों के तत्त्वबोध से प्राप्त होता है। विनय का मूल इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना है, अतः जो जितेन्द्रिय है वही शास्त्रज्ञान प्राप्त करता है।

मनरूपी व्याध विषयरूपी मांस के लोभ से इन्द्रियों को प्रेरित करता है, अतः मन को प्रयत्नपूर्वक रोकना चाहिए। मन को जीतने पर मनुष्य 'जितेन्द्रिय' हो जाता है।

सदा मनोहर और मधुर वचनों से सारे संसार को आनंदित करना चाहिए। कठोर वचन बोलनेवाला कुबेर के समान धनी औ[र] दानी हो तो भी वह मनुष्यों क[ो] उद्विग्न ही करता है।

मद से उन्मत्त हंस कोयल और मयूर क[ी] वाणी भी मनुष्य क[े] मन को उतना प्रसन्[न] नहीं करती, जितन[ा] आप्तपुरुषों की वाण[ी] चित्त को आह्लादित करती है।

प्राणिमात्र पर दया और सबके साथ मित्रता दान देना व मधुर वचन बोलना- तीनों लोकों [में] इनसे बढ़कर और कोई वशीकरण मंत्र नहीं है।

चाहे वह कुबेर ही क्यों न हो, किसीका भ[ी] संचित धन नित्य धनागमन के बिना इच्छानुसा[र] व्यय करने के लिए पर्याप्त नहीं होता अर्थात् एक दिन समाप्त हो जाता है, अतः आय के अनुसा[र] ही व्यय करना चाहिए।

जो मनुष्य दुराग्रह को छोड़कर बालक के भ[ी] युक्तियुक्त वचन स्वीकार करता है और धर्मतत्त्व का विवेचन तथा निश्चय करता है- वही 'पंडित' कहलाता है।

परस्त्री की कामना करनेवाले बहुत-से मनुष्[य] संसार में नष्ट हो गये, जिनमें इन्द्र, दण्डक्य, नहुष, रावण आदि के उदाहरण प्रसिद्ध हैं।

संप्राप्यं महतीं वृद्धिं वर्तेत पितुराज्ञया।
पुत्रस्य पितुराज्ञाहि परमं भूषणं स्मृतम्।

महान ऐश्वर्य प्राप्त करके भी पुत्र को पित[ा] की आज्ञा के अनुसार ही चलना चाहिए क्योंकि पुत्र के लिए पिता की आज्ञापालन करना परम भूषण है। (२.३७-३८) (क्रमशः)

व्रतोपवासैर्यैर्विष्णुर्नान्यजन्मनि तोषितः। ते नरा मुनिशार्दूल ग्रहरोगादिबाधिनः॥

'जिन्होंने पूर्वजन्म में व्रतोपवासों के द्वारा भगवान विष्णु को प्रसन्न नहीं किया, वे मनुष्य ही इस जन्म में ग्रह, रोग, व्याधि, कष्ट आदि से पीड़ित रहते हैं।'

(विष्णुधर्मोत्तर पुराण)

शीघ्र कल्याण कैसे हो ?

हेतु रहित जग जुग उपकारी ।
तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी ।।
स्वारथ मीत सकल जग माहीं ।
सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं ।।

(रामचरित. उ.कां. : ४६.३)

केवल भगवान तथा उनको पाये हुए महापुरुष - ये दो ही हमारा मंगल करनेवाले हैं, तीसरे किसी व्यक्ति से, किसी वस्तु से, किसी परिस्थिति से हमारा कल्याण होना संभव नहीं है। न धन से कुछ होगा, न मान-बड़ाई से कुछ होगा और न ही मकान-दुकान या परिवार से हमारा कुछ भला होगा । ये शरीर को सुविधा व आसक्ति देकर श्मशान तक पहुँचा देंगे, हमारा आत्मकल्याण नहीं कर सकते। संसार की इन चीजों से भला तो कुछ होगा नहीं, केवल समय बरबाद हो जायेगा, पास में रही हुई पूँजी खत्म हो जायेगी और 'हाय-हाय !' करते मरना पड़ेगा। इसलिए हमारा कल्याण करनेवाले भगवान और आत्मानुभवी महापुरुषों में प्रीति, अनुराग पैदा हो जाय तो शीघ्र कल्याण हो जायेगा । उनमें अनुराग पैदा करने का सरल साधन है उनकी जीवन-लीलाओं एवं प्रेरक कथाओं में मन लगाना। आप उनको तल्लीन होकर पढ़ो, सुनो। उनमें अगर मन लग जायेगा तो भगवत्कृपा, संतकृपा होकर ही रहेगी, जबरदस्ती होगी ।

कोई कहेगा कि 'हम संत को ठीक-ठीक जानते नहीं तो क्या उनकी कृपा से सब हो जायेगा ?'

उनको जानने-न जानने की चिंता मत करो। उनको जानो या मत जानो, उनके कहने के अनुसार करो तो निश्चित ही भला होता है। हो जायेगा क्यों ? अभी होना चाहिए, अभी भगवान में मन लगना चाहिए। भविष्य में हमारा कल्याण हो जायेगा - इसका क्या भरोसा ? अध्यात्म के क्षेत्र में वर्तमान में कल्याण का महत्त्व है।

संत मिल गये, महात्मा मिल गये, गुरुजी मिल गये, इनकी कृपा से सब कुछ भला हो जायेगा- ऐसा जो मान लेता है पर करता कुछ नहीं वह अपने साथ धोखा करता है। संत मिल गये तो आपमें परिवर्तन आना चाहिए न ? जैसे नींद में प्यास लगी और जल पीते हैं पर उससे तृप्ति नहीं होती, ऐसे ही संत मिलने पर, अच्छा संग मिलने पर भी हमारी तृप्ति नहीं हुई, हमारी दशा वैसी ही है तो क्या मिल गया ? हमारा जीवन बदल जाना चाहिए, जीवन भगवान में लग जाना चाहिए । इसलिए भगवत्प्राप्त संत-महापुरुष में प्रीति करके फिर सर्वतोभावेन उनकी शरण में जाना चाहिए, उनकी आज्ञा के पालन में पूरी शक्ति से लग जाना चाहिए ।

शीघ्र कल्याण के लिए भगवन्नाम-जप व भगवद्-सुमिरन करो; दो-दो, चार-चार मिनट में भगवान को, सद्गुरु को मन-ही-मन नमस्कार करके भीतर से पुकारो कि 'हे नाथ ! आप मुझे मीठे लगें, प्रिय लगें। हे प्रभु ! आपके चरणों में मन लग जाय ।' आपकी एक ही माँग हो कि ईश्वर या गुरु में चित्त खिंच जाय, उनका नाम मीठा लगे, उनके गुण मीठे लगें, उनकी लीला मीठी लगे, उनके चरित्र मीठे लगें, प्रिय लगें।

***

ये कुर्वन्ति उपवासांश्च विधानेन शुभान्विताः ।
न यान्ति ते मुनिश्रेष्ठ नरकान् भीमदारुणान् ।।

'जो कल्याणकामी विधिपूर्वक व्रतोपवासों का परिपालन करते हैं, वे दारुण तथा भयंकर नरकों में नहीं जाते।' (पद्म पुराण)

आपकी समस्या संतों के उपाय

प्रश्न : संकीर्तन के समय भगवान के जिस नाम का उच्चारण करें उसके साथ नामी का ध्यान करना आवश्यक है। किंतु **'हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे'** मंत्र के उच्चारण में तो पहले श्रीहरि और श्रीराम नाम है, बाद में श्रीहरि और श्रीकृष्ण नाम है। क्या प्रथम चरण बोलते समय रामजी का और दूसरा चरण बोलते समय श्रीकृष्ण का ध्यान करना चाहिए ? ऐसे तो ध्यान ठीक नहीं हो सकता, ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए ?

श्री उड़िया बाबाजी : भक्त को सदैव एकमात्र अपने इष्ट का ही ध्यान करना चाहिए। मंत्र में जो इष्टदेव का नाम है वह तो उनका है ही, उसके अतिरिक्त जो अन्य नाम हैं वे भी अपने इष्ट के ही समझने चाहिए। अतः जप या कीर्तन करते समय श्रीकृष्ण के भक्त को तो श्रीकृष्ण का ही ध्यान करना चाहिए। जब वह **'हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे'** का उच्चारण करे तब भी श्रीकृष्ण का ही ध्यान करे और यह समझे कि 'श्रीराम' और 'श्रीकृष्ण' एक ही हैं क्योंकि 'राम' उसीको कहते हैं जो सब जगह रमा हुआ है, जिसमें योगीजन रमण करते हैं। श्रीकृष्ण पर यह नाम पूर्णतया सार्थक है क्योंकि वे भी सब जगह रमे हुए हैं और योगी उनमें रमण करते हैं। इसी प्रकार श्रीरामभक्त को, जब वह **'हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे'** उच्चारण करे तब भी श्रीराम का ही ध्यान करना चाहिए क्योंकि श्रीराम का नाम कृष्ण भी है। 'कृष्ण' का अर्थ है आकर्षित करनेवाला। जैसे श्रीकृष्ण मन को आकर्षित करते हैं, उसी प्रकार श्रीराम भी उसे अपनी ओर आकर्षित करते हैं। श्रीकृष्ण और श्रीरामचन्द्रजी के अवतार के लाखों वर्ष पहले वेदों में इन मंत्रों की महिमा आती है।

प्रश्न : चित्त के दोष मिटाने का उपाय क्या है ?

पूज्य बापूजी : 'चित्त के दोष मेरे दोष हैं' - ऐसा मानने से हममें हताशा-निराशा का भाव जागृत होता है और दोषों को बल मिलता है। इसलिए चित्त के साथ जुड़कर उसके दोष निकालने में मत लगो, निर्दोष आत्मा में लग जाओ। हम दोष निकालने जायेंगे तो दोष निकालनेवाला (कर्ता) भी बन जायेगा तो भी दोष हो जायेगा। इसलिए चित्त के दोष निकालने के लिए 'मैं चित्त नहीं हूँ, आत्मा हूँ और आत्मा निर्दोष है, चैतन्य है, आनंदस्वरूप है, ज्ञानस्वरूप है। ॐ आनंद ॐ... ॐ शांति...' ऐसा चिंतन करो और सद्गुरु के दिये इष्टदेव के मंत्र में ऐसे लग जाओ कि दोषी होने का अभिशाप और गुणी होने का अहंकार न आये। सतर्कतापूर्वक चित्त के विचारों पर कड़ी निगरानी रखो, साक्षीभाव में आ जाओ। दोष पनपता दिखे तो तुरंत उस पर मिथ्यात्व की मुहर लगा दो कि 'दोष की अपनी कोई सत्ता ही नहीं है। मैं इसके साथ जुड़कर इसे सत्ता-स्फूर्ति नहीं दूँगा।' इससे दोष बलहीन हो जायेगा। ❑

संत तुलसीदासजी की वाणी

धनहीन कहे धनवान सुखी।
धनवान कहे सुख राजा को भारी॥
राजा कहे महाराजों को सुख।
महाराजा कहे सुख इन्द्र को भारी॥
इन्द्र कहे चतुरानन को सुख।
ब्रह्मा कहे सुख विष्णु को भारी॥
तुलसीदास विचारी कहे।
हरिनाम बिना सब लोक दुखारी॥

आत्म-उद्धार करने के लिए वासना की निवृत्ति को छोड़कर दूसरा कोई भी उपाय न कभी था, न होगा।

प्रातःस्मरणीय पुण्यश्लोक या शिष्टांजलि

'पद्म पुराण' तथा अन्य शास्त्रों में कुछ ऐसे श्लोक दिये गये हैं, जिन्हें 'प्रातःस्मरणीय पुण्यश्लोक या शिष्टांजलि' कहा जाता है। इनका प्रातःकाल पाठ करने से बहुत मंगल होता है। जैसे- दिन अच्छा बीतता है, कलियुग बाधक नहीं बनता, विष का भय नहीं रहता, सौभाग्य व धर्म की वृद्धि होती है, रोगों व विकारों से रक्षा होती है, अकाल मृत्यु नहीं होती, संकटों का नाश होता है आदि।

निष्काम साधकों को भी भगवत्प्रीत्यर्थ इन श्लोकों का पाठ करना चाहिए।

*** दीर्घायु प्राप्ति के लिए -**

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥

(पद्म पुराण)

सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः॥

(आचारेन्दु)

*** महापातक नाश के लिए-**

अहिल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा।
पंचकं वै स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्॥

*** सौभाग्य वृद्धि के लिए-**

उमा उषा च वैदेही रमा गंगेति पंचकम्।
प्रातरेव पठेन्नित्यं सौभाग्यं वर्धते सदा॥

*** व्याधि नाश के लिए-**

सोमनाथो वैद्यनाथो धन्वन्तरिरथाश्विनौ।
पंचैतान् यः स्मरेन्नित्यं व्याधिस्तस्य न जायते॥

*** घोर संकट नाश के लिए-**

हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनूमन्तं हलायुधम्।
पंचकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसंकटनाशनम्॥

*** कामवासना से बचने हेतु-**

सनत्कुमारदेवर्षिशुकभीष्मप्लवंगमाः।
पंचैतान् स्मरतो नित्यं कामस्तस्य न बाधते॥

*** महाबाधा नाश करने हेतु-**

रामलक्ष्मणौ सीता च सुग्रीवो हनुमान् कपिः।
पंचैतान् स्मरतो नित्यं महाबाधा प्रमुच्यते॥

(पद्म पुराण)

रामायण सदा शांति, संतोष और प्रेरणा का स्रोत रहा है।

पुरातन काल से रामायण के प्रति लोगों की अगाध श्रद्धा और प्रेम रहा है। यह सदा शांति, संतोष और प्रेरणा का स्रोत रहा है। इस ग्रंथ में सामाजिक मूल्यों और उच्च आदर्शों का अक्षय भंडार है, जिससे मनुष्य के चरित्र का निर्माण होता है। दुनिया में ऐसे ग्रंथ कम ही होंगे जो जनसाधारण में इतने लोकप्रिय हों। इसे सिर्फ भारतीय अथवा हिन्दू पुस्तक मानना अनुचित होगा- ऐसा मैं मानता हूँ। इण्डोनेशिया, जावा आदि अनेक देशों में रामायण के संदेश का प्रभाव हम देख सकते हैं।

- मोरारजी देसाई

(१७ नवम्बर १९७७) (तत्कालीन प्रधानमंत्री, भारत)।

संसार अत्यन्त दुःखदायी है। अतः संसार की निवृति के लिए और उत्तम ज्ञान की प्राप्ति के लिए मन को नित्य जाग्रत करें।

चर्चों में बजेगा रॉक संगीत

अपने ही धर्मावलम्बियों की उपस्थिति बढ़ाने के चक्कर में चर्चें अब नये-नये हथकंडे अपना रही हैं। बी.बी.सी. एवं अन्य समाचार एजेंसियों के अनुसार 'चर्च ऑफ इंग्लैंड' लोगों को अपनी धर्मसभाओं में आकर्षित करने के लिए धार्मिक वंदना के स्थान पर रॉक संगीत बजायेगी। एक पादरी के अनुसार धर्मसभाओं में नवीनता और रोचकता लाने के लिए व युवाओं को चर्च की ओर आकृष्ट करने लिए रॉक संगीत एक सक्षम माध्यम सिद्ध होगा। रॉक संगीत के मूल गीतों के कुछ शब्दों को बदलकर पेश करके उन्हें धर्मानुकूल बनाया जा रहा है। पाश्चात्य विचारक ही इसका कड़ा विरोध कर रहे हैं। एलन यूस्को एवं एड प्रायर अपने लेख 'रिलिज्यस रॉक - द म्यूजिक ऑफ डेविल्स इन द चर्च' में लिखते हैं कि रॉक संगीत विद्रोह, उद्दण्डता व अनैतिकता को भड़काता है तथा अधार्मिक है। इस संगीत में अश्लीलता, कामुकता, तेज आवाज एवं द्विअर्थी शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जिससे श्रोता सम्मोहित हो जायें। इनके अनुसार रॉक संगीत का इतिहास हिंसा, नशीली वस्तुओं के प्रयोग, जादू-टोने, आत्महत्या, व्यभिचार आदि दुष्कृत्यों से जुड़ा रहा है, जिससे यह मात्र एक संगीतशैली नहीं बल्कि नैतिक पतन का माध्यम है।

'वैशेषिक दर्शन' में कहा गया है : **यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।** 'जिससे अभ्युदय और परम कल्याण (मोक्ष) की सिद्धि हो, वही धर्म है।'

निश्चित ही धर्म वही है जो हित व उन्नतिकारक हो परंतु अपने धर्म का विस्तार ही जिनका उद्देश्य है वे अपने ही धर्म के सिद्धान्तों का गला घोंटकर किसी भी हद तक गिरने को तैयार हैं। इसमें हित की नहीं वरन् स्वार्थ की प्रधानता है।

शास्त्र कहते हैं :

शिलायाः किं परं ज्ञानं शिलासंघप्रतारणे।
स्वयं तर्तुं न जानाति परं निस्तारयेत्कथम् ॥

'पत्थरों के समूह को तैराने का ज्ञान पत्थर में कहाँ से हो सकता है ? जो खुद तैरना नहीं जानता वह दूसरों को क्या तैरायेगा ?'

जो धर्म स्वयं को विश्व का उद्धारक मान बैठा है वह आज उद्धार के लिए रॉक संगीत की शरण है- कैसी दयनीय दशा है !

(www.logosresourcepages.org) ❐

'तिलक लगाकर आओगे तो सिर फोड़ दूँगा...' - देवजी वसावा

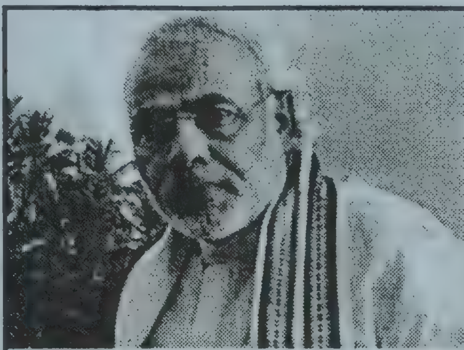
गुजरात के नर्मदा जिले के नितालदा गाँव में जिला पंचायत द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय में पढ़नेवाले 'वनवासी कुमार छात्रावास' के ५वीं तथा ६ठी कक्षा के विद्यार्थियों को विद्यालय के ही एक ईसाई शिक्षक ने तिलक लगाकर विद्यालय आने पर सिर फोड़ डालने की धमकी दी है। उक्त ईसाई शिक्षक देवजी वसावा हिन्दू संस्कृति का सख्त विरोधी है। इस धमकी से घबराकर विद्यार्थी अब विद्यालय जाने से डर रहे हैं। विद्यार्थियों के अभिभावकों ने ऐसे क्रूर शिक्षक को कड़क सजा देने की माँग की है। तिलक लगाने से तो सूझबूझ बढ़ती है और यह ईसाई शिक्षक तिलक लगाने पर सिर फोड़ने की धमकी देता है। लोगों में इस बात की काफी चर्चा है। ❐

घोर आपत्ति में भी कुमार्ग पर पैर नहीं रखना चाहिए।

शराब बेचने पर ११ हजार रुपये का जुर्माना

कुछ माह पूर्व जि. राजसमंद (राज.) की लसाड़िया ग्राम पंचायत के कासिया, केमरिया, ढंढ आदि अनेक गाँवों में शराबखोरी इतनी बढ़ चुकी थी कि महिलाएँ और बच्चे भी शराब पीने लगे थे। हालात यह थे कि आठवीं कक्षा के स्कूली बच्चे शराब पीकर शिक्षकों से भी झगड़ा कर लेते थे।

यहाँ की ग्राम पंचायत व अन्य लोगों ने पुलिस के सहयोग से शराब के खिलाफ मुहिम का बीड़ा उठाया। उन्होंने शराब बेचनेवाले पर ११ हजार रुपये का जुर्माना तो लागू किया ही, साथ ही ऐसे लोगों को पकड़नेवालों को भी पाँच सौ रुपये इनाम देने की घोषणा की। अब यहाँ न कोई शराब पीता है और न ही बेचता है। शराब का सरकारी ठेकेदार भी अपनी दुकान बंद कर गया। इसके फलस्वरूप अब इन गाँवों में झगड़े और अपराधों में भारी कमी आयी है। लसाड़िया ग्राम पंचायत ने अन्य ग्राम पंचायतों के लिए एक नया आदर्श स्थापित किया है।


गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

सरकार को उचित है कि देश के अन्य गाँवों को भी इस तरह प्रोत्साहित करे। प्रजा के हित में बाहोश मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और गुजरात सरकार भी प्रजा के हित की यह बात तुरंत स्वीकार करेगी- ऐसी हमारी पक्की उम्मीद है। - परम पूज्य बापूजी

वाराणसी पर यूनेस्को की नजर

स्पेन के ऐंडालुसिया राज्य की सरकार वाराणसी को 'विश्व-धरोहर' घोषित किये जाने की सिफारिश कर रही है। वह वाराणसी के घाटों और उस पर स्थित प्राचीन इमारतों के जीर्णोद्धार के लिए आर्थिक मदद भी देने को तैयार है। यूनेस्को (UNESCO) ने भी इसके प्रति रुझान दिखाया है। आज तक का यह अनुभव है कि विश्व-धरोहर घोषित किये जाने के बाद ये स्मारक यूनेस्को की देख-रेख में आ जाते हैं और स्थानीय लोगों व सरकार का इन पर से नियंत्रण घट जाता है। बोधगया में इमारतों पर लगायी गयी पाबंदियाँ, पावागढ़ के किले में ध्वज-वंदन कार्यक्रम पर लगायी गयी रोक और स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले में प्रधानमंत्री के लिए नयी लिफ्ट बनाने की मनाही- ये कुछ उदाहरण हैं। इनके आधार पर इस बात की प्रबल संभावना है कि भारत के पवित्र तीर्थ वाराणसी के घाटों पर की जानेवाली धार्मिक विधियों आदि पर रोक लगायी जा सकती है।

क्या भारतवासी विदेशियों की स्वार्थपूर्ण सहानुभूतियों की वाहवाही करेंगे या सतर्क होकर अपनी प्राचीन धरोहरों को विदेशी हाथों में जाने से बचायेंगे ?

(पृष्ठ ३ का शेष)

सनातन धर्म के संतों ने 'परहित' को सर्वोपरि धर्म कहा है :

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई।

(रामचरित. उ.कां. : ४०.१)

वैसे तो ज्ञान सर्वश्रेष्ठ है। ज्ञान से भी परमात्मा का ध्यान श्रेष्ठ है। ध्यान से भी सब कर्मों के फल का त्याग श्रेष्ठ है क्योंकि त्याग से तत्काल ही परम शांति होती है।

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्॥

(गीता : १२.१२)

पिशाचमोचन श्राद्ध तिथि : मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दशी

(२२ दिसम्बर २००७)

इस दिन पिशाच (प्रेत) योनि में गये हुए जीवों (पूर्वजों) के निमित्त तर्पण आदि करने का विधान है। भूत-प्रेतादिक से ग्रस्त व्यक्ति इसे अवश्य करें। यह प्रयोग गत वर्ष नोयडा (उ.प्र.) के दुर्घटना संभावित क्षेत्र में पूज्य बापूजी की आज्ञा से सम्पन्न किया गया था। जिससे वहाँ प्रेतयोनि में भटक रहे जीवात्माओं की सद्‌गति हुई। वहाँ होनेवाली दुर्घटनाओं पर भी लगाम लगी।

जब तर्पण करके प्रेतयोनि में भटकनेवालों की सद्‌गति हुई तो उनके माता, पिता, परिजन आदि के संतप्त हृदय शीतल और संतुष्ट हुए।

नोयडा के डिप्टी डायरेक्टर श्री वेद प्रकाश सिंह की कन्या दुर्घटना में चल बसी थी। प्रेतमोचनी एकादशी को उस इलाके के दुर्घटना में मृत जीवों की सद्‌गति के लिए किये गये तर्पण से उनके कुटुम्बों के हृदय की संतप्तता मिटी और उन्हें शीतलता-प्रसन्नता प्राप्त हुई।

विधि : प्रातःस्नान के बाद दक्षिणमुख होकर बैठें। तिलक, आचमन आदि के बाद पीतल या ताँबे के थाल अथवा तपेली आदि में पानी लें। उसमें दूध, दही, घी, शक्कर, शहद, कुमकुम, अक्षत, तिल, कुश मिलाकर रखें। हाथ में शुद्ध जल लेकर संकल्प करें कि 'अमुक व्यक्ति (नाम) के प्रेतत्व निवारण हेतु हम आज पिशाचमोचन श्राद्ध तिथि को यह पिशाचमोचन श्राद्ध कर रहे हैं।' हाथ का जल जमीन पर छोड़ दें। फिर थोड़े काले तिल अपने चारों ओर जमीन पर छिड़क दें कि भगवान विष्णु हमारे श्राद्ध की असुरों से रक्षा करें। अब अनामिका उँगली में कुश की अँगूठी पहनकर (**'ॐ अर्यमायै नमः'**) मंत्र बोलते हुए पितृतीर्थ से १०८ तर्पण करें अर्थात् थाल में से दोनों हाथों की अंजली भर-भर के पानी लें एवं दायें हाथ की तर्जनी उँगली व अँगूठे के बीच से गिरे, इस प्रकार उसी पात्र में डालते रहें। (तर्पण पीतल या ताँबे के थाल अथवा तपेली में बनाकर रखे जल से करना है।)

१०८ तर्पण हो जाने के बाद दायें हाथ में शुद्ध जल लेकर संकल्प करें कि सर्व प्रेतात्माओं की सद्‌गति के निमित्त किया गया यह तर्पणकार्य भगवान नारायण के श्रीचरणों में समर्पित है। फिर तनिक शांत होकर भगवद्-शांति में बैठें। बाद में तर्पण के जल को पीपल में चढ़ा दें। ❐

बातें छोटी-छोटी लाभ ढेर सारा

(श्री सुरेशानंदजी के प्रवचन से)

१. किसी व्यक्ति के लिए तांत्रिक प्रयोग किया गया हो (जिसके कारण वह कभी चिल्लाता है, कभी बाल नोचता है आदि) तो उस व्यक्ति के तकिये के नीचे रात में उसके सोने से पहले दूब (दूर्वा) रखें। सुबह उसके उठने के बाद उस दूर्वा को नदी में प्रवाहित कर दें। लगातार तीन दिन तक रात का रखा हुआ दूब सुबह नदी में प्रवाहित करें। तत्पश्चात् छः रात्रि तक सोने के पहले रात में तकिये के नीचे दूब रखें और सुबह उसे प्रवाहित न करें, इकट्ठा करते जायें। सातवें दिन कोयले जलाकर (लकड़ी नहीं) छः दिन के रखे हुए दूब टुकड़े करके जलायें, फिर उसे नदी में प्रवाहित कर दें। इससे तांत्रिक प्रयोग का प्रभाव नष्ट होगा।

२. पूर्णिमा को चंद्रोदय होने पर ताँबे के लोटे में जल, कच्चा दूध व शक्कर डालकर चंद्रमा को अर्घ्य दें तथा दीपक जलाकर चंद्रमा की आरती करें। इससे अनिष्ट टल जाता है, आर्थिक कष्ट दूर होता है, घर में सुख-शांति रहती है।

३. घर में अधिक झगड़े होते हों तो परिवार के मुख्य व्यक्ति जहाँ सोयें, उनके पलंग के नीचे रात में एक लोटा पानी रख दें। सुबह वह पानी पीपल के पेड़ में डाल दें। इससे लाभ होता है।

जरा, मरण आदि दुःखों की निवृत्ति के लिए तत्परतापूर्वक प्रयत्न करना चाहिए।

दिव्य औषधि गुडुच

गुडुच, गुरुच या गिलोय अमृततुल्य गुणकारी रसायन, दिव्य औषधि होने के कारण अमृता कहलाती है। यह सर्वरोगों से रक्षा करनेवाली है। इसका ताजा रस विशेष लाभदायी होता है। गुडुच का प्रयोग क्षय, प्रमेह, त्वचाविकार, ज्वर, पांडु व लीवर के रोगों में विशेष लाभदायी है। गुडुच का चूर्ण शहद के साथ लेने से हृदयरोगियों को फायदा होता है। घी (१०-१५ ग्राम अर्थात् एक चम्मच) मिलाकर लेने से वायु का शमन होता है। शक्कर (१० ग्राम) के साथ प्रयोग करने से पित्त का तथा शहद (१०-१५ ग्राम) के साथ प्रयोग करने से कफ का शमन होता है।

गुडुच के उपयोग :

✻ गुडुच का रस पीने से मलेरिया तथा पुराना बुखार दूर होता है।

✻ चुटकी भर दालचीनी व लौंग के साथ लेने से मुद्दती बुखार दूर होता है।

✻ बुखार के बाद रहनेवाली कमजोरी में गुडुच का रस पौष्टिक एवं शक्तिप्रदायक है।

✻ २-३ ग्राम अधकुटी सोंठ व २५-३० ग्राम कूटी हुई ताजी गिलोय का काढ़ा बनाकर पीने से संधिवात तथा आमवात दूर होता है।

✻ गुडुच के रस में मिश्री मिलाकर पीने से पीलिया में लाभ होता है।

✻ गुडुच का रस दीर्घकाल तक लेते रहने से कायमी कब्जी के रोगी को लाभ होता है।

✻ गुडुच के चूर्ण अथवा रस का नियमित उपयोग डायबिटीजवालों के लिए लाभदायी है। हररोज इंजेक्शन तथा टिकियों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। उनके कुप्रभावों से रोगी बच जायेगा।

✻ माता को गुडुच का चूर्ण अथवा रस देने से दूध बढ़ता है व दूध के दोष दूर होते हैं। माता के दूषित दूध के कारण होनेवाले रोगों से बालक की रक्षा होती है।

✻ गुडुच उत्कृष्ट मेध्य अर्थात् बुद्धिवर्धक रसायन है। इसके नियमित सेवन से दीर्घायुष्य, चिरयौवन व कुशाग्र बुद्धि की प्राप्ति होती है।

✻ सिद्ध योगी गोरखनाथजी कहते हैं : कुण्डलिनी जागरण के समय शरीर में गर्मी महसूस हो तो गुडुच के रस में शहद ठीक प्रकार से मिश्रित करके तृप्तिपूर्वक लिया जाय तो मणिपुर चक्र, नाभि चक्र का शोधन सरलता से हो जाता है।

चूर्ण की मात्रा : २ से ३ ग्राम।

रस की मात्रा : २० से ३० मि. ली.।

✻ सोते समय सिर को पूर्व या दक्षिण की ओर ही करके सोना चाहिए। उत्तर की ओर सिर करके सोने से बुरे स्वप्न आते हैं, आयुष्य क्षीण होता है। जैसे दिशायंत्र की सूई उत्तर की ओर होती है तब स्थिर हो जाती है, उसी प्रकार मस्तक में धमनी नाड़ी है, जो तालु में लपका करती है, वह जब दोनों ध्रुवों के बीच उत्तर में होती है तब दिशायंत्र की सूई की भाँति ठहर जाती है। इसके ठहरने से मस्तक में रोग होते हैं, जो कभी-कभी भयानक होते हैं। इससे उत्तर की ओर सिर रखकर कभी नहीं सोना चाहिए।

✻ सोने से पहले आँखों में अंजन आँजना चाहिए। हाथ-पाँव धोकर और कुल्ला करके सोना चाहिए लेकिन गीले पैर करके कदापि न सोयें। सोने के कुछ समय पहले हाथ-पैर धो लेना चाहिए। इससे नींद गहरी आती है एवं स्वप्न नहीं दिखते।

✻ रात्रि को सोते समय और सुबह को उठते ही ताजे पानी से सदा मुँह धो डालें तो इससे मुख की कान्ति बनी रहेगी, मुख पर झुर्रियाँ नहीं पड़ेंगी।

✻ सूर्योदय तक न सोयें। तारागण दिखते हों तब तक उठ जायें। आँख खुलने के बाद फिर से न सोयें। इस प्रकार सोने से शक्ति का क्षय होता है।

थोड़ा-सा बासी (अगले दिन का मटके का) पानी पीकर मलत्याग करें। इससे काया नीरोग और चित्त प्रसन्न रहता है।

सदा रैन को सोई के, जो जागे बड़ भोर।
रहै निरोगी शरीर सों, गहै ज्ञान की डोर ॥

वैवाहिक विज्ञापन

वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु। आपके कुल में सदैव हरिभक्ति बनी रहे।

मराठा जाति, गौतम ऋषि गोत्र, २८/५', शिक्षा - बी.एच.एम.एस. (होम्योपैथिक डॉ.), दीक्षा- २००० पंचेड़ में, व्यवसाय- स्वयं का दवाखाना, राणापुर जि. झाबुआ (म.प्र.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए।
(संपर्क : लो.क.से.बॉक्स क्र. M- 1302)

मराठा जाति, गौतम ऋषि गोत्र, २७/५', शिक्षा-एम.ए. (ग्रामीण-विकास विभाग), दीक्षा- २००० पंचेड़ में, व्यवसाय- एन.जी.ओ. में सर्विस, राणापुर जि. झाबुआ (म.प्र.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए।
(संपर्क : लो.क.से.बॉक्स क्र. M- 1803)

क्षत्रिय जाति, बार गोत्र, रंग गेहुँआ, २५/५'-६'', शिक्षा- १२वीं, डिप्लोमा इन कम्प्यूटर साइंस, दीक्षा-२००१ अमदावाद में, व्यवसाय- प्राइवेट कम्पनी में नौकरी, वाशी-नवी मुंबई (महा.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए। फोन : 09820336676.
(संपर्क : लो.क.से.बॉक्स क्र. M- 1804)

गुर्जर गोड ब्राह्मण जाति, लोडेल्या गोत्र, रंग- गोरा, २९/५'-८'', शिक्षा- बी.कॉम., दीक्षा- १९९३ हरिद्वार में, व्यवसाय- ऑटो पार्ट्स की दुकान, श्योपुर (म.प्र.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए। फोन : ०९८२६२१४४३१.
(संपर्क : लो.क.से.बॉक्स क्र. M- 1745)

सनाढ्य ब्राह्मण जाति, भारद्वाज गोत्र, रंग गोरा, २५/६', शिक्षा - बी.ई. (इलेक्ट्रॉनिक्स एंड टेलीकम्युनिकेशन), दीक्षा- २००३ भोपाल में, व्यवसाय- सॉफ्टवेयर इंजीनियर, कोपर खैराने, नवी मुंबई (महा.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए। फोन : 09820766984.
(संपर्क : लो.क.से.बॉक्स क्र. M- 1807)

कायस्थ (श्रीवास्तव) जाति, कश्यप गोत्र, रंग- गेहुँआ, २५/५'-२'', शिक्षा- बी.एससी., बी.एड., दीक्षा- १९९८ वाराणसी में, व्यवसाय- अध्यापिका, खोजनपुर जि. फैजाबाद (उ.प्र.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 9935936285.
(संपर्क : लो.क.से.बॉक्स क्र. M- 1808)

तेली (महाराष्ट्रियन) जाति, रंग गोरा, ३०/५'-७'', शिक्षा- बी.ई. (मैकेनिकल), एम.एस. (यू.के.), दीक्षा- २००६ मुंबई में, व्यवसाय- नौकरी (लंदन, यू.के. में), भंडारा (महा.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए। फोन : 09422832115.
(संपर्क : लो.क.से.बॉक्स क्र. M- 1809)

ब्राह्मण जाति, कश्यप गोत्र, रंग गोरा, ३०/५'-५½'', शिक्षा- एम.ए., बी.एड., दीक्षा- २००० प्रयाग (इलाहाबाद) में, व्यवसाय- भारतीय सेना में धर्मशिक्षक, रानोपाली पो. अयोध्या जि. फैजाबाद (उ.प्र.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए।
(संपर्क : लो.क.से.बॉक्स क्र. M- 1812)

ब्राह्मण जाति, वशिष्ठ गोत्र, रंग गोरा, २४/५'-३'', शिक्षा- बी.कॉम., दीक्षा- २००३ बैरागढ़ (भोपाल) में, भोपाल (म.प्र.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 09977094141.
(संपर्क : लो.क.से.बॉक्स क्र. M- 1815)

वैश्य जाति, कश्यप गोत्र, रंग गोरा, ३०/५'-७'', शिक्षा- एम.कॉम, दीक्षा- २००५ राँची में, निजी व्यवसाय, राँची (झारखंड) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए। फोन : (0651) 2200841.
(संपर्क : लो.क.से.बॉक्स क्र. M- 1816)

वैश्य गुप्ता जाति, कश्यप गोत्र, रंग- गोरा, २८/५'-३'', शिक्षा- बी.ए., दीक्षा- पुरी (उड़ीसा) में, राँची (झारखंड) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : (0651) 2200841.
(संपर्क : लो.क.से.बॉक्स क्र. M- 1817)

तिरले कुन्बी जाति, वशिष्ठ गोत्र, रंग गोरा, २६/५'-२'', शिक्षा- एम.कॉम., पी.जी.डी.सी.ए., फैशन डिजाइनिंग, डिप्लोमा इन कॅमर्शियल कॅम्प्यूटर, दीक्षा- २००१ भोपाल में, नागपुर (महा.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : (0712) 2582602.
(संपर्क : लो.क.से.बॉक्स क्र. M- 1818)

(पृष्ठ १७ का शेष) दीपावली महोत्सव आयोजित किया गया। इस अवसर पर पूज्यश्री के विडियो सत्संग एवं सत्साहित्य के माध्यम से कैदियों को जीवन की सही राह बतायी गयी तथा उन्हें सुसंस्कारी, ईमानदार व श्रेष्ठ नागरिक बनने हेतु सत्प्रेरणा एवं मार्गदर्शन दिया गया।

यहाँ भंडारे का भी आयोजन किया गया था।

बाल संस्कार केन्द्रों की प्रवृत्तियाँ

सिधौली, जि. सीतापुर (उ.प्र.) में बच्चों ने भव्य संकीर्तन यात्रा निकाली।

पूना (महा.) स्थित बाल संस्कार केन्द्र द्वारा १८ विद्यालयों में 'संस्कार सिंचन कार्यक्रम' किये गये। जिसमें विद्यार्थियों को तन को स्वस्थ, मन को प्रसन्न व बुद्धि को तेजस्वी रखने के सरल यौगिक प्रयोग बताये गये व सत्साहित्य बाँटा गया।

अमदावाद (गुज.) के बाल संस्कार केन्द्र द्वारा दीपावली के दिन गरीब विद्यार्थियों के बीच 'संस्कार सिंचन कार्यक्रम' किये गये तथा सत्साहित्य व मिठाई के पैकेट बाँटे गये।

जवाहरनगर, भंडारा (महा.) स्थित बाल संस्कार केन्द्र के बच्चों ने अस्पतालों के रोगियों में फल-वितरण किया।

***

विभिन्न समितियों द्वारा किये जा रहे दैवी सेवाकार्यों की एक झलक

✾ संकीर्तन यात्राएँ एवं भंडारे ✾

ओझरमिग जि. नासिक, दौंड जि. पूना, भुसावल, वाशिम, कराड जि. सतारा (महा.); डेहरी जि. धार (म.प्र.); आहवा जि. डांग, किल्लापारडी जि. वलसाड (गुज.); सिलीगुड़ी (प. बंगाल); हरदोई, नवगढ़ जि. वाराणसी (उ.प्र.); भिलाई जि. दुर्ग, रायपुर (छ.ग.); विशाखापट्टनम् (आं.प्र.); कालका जि. पंचकूला (हरि.) में संकीर्तन यात्राएँ निकाली गयीं तथा भंडारे किये गये ।

✾ गरीबों में निःशुल्क अनाज-वितरण ✾

पाली जि. कोरबा, रायपुर (छ.ग.); नेरूल, बेलापुर जि. नवी मुंबई, उरण जि. रायगढ़ (महा.); बिलिया जि. पाटन (गुज.) के गरीबों में निःशुल्क अनाज-वितरण किया गया ।

✾ व्यसनमुक्ति अभियान ✾

बरसी जि. चित्तौड़गढ़ (राज.) में त्रिदिवसीय व्यसनमुक्ति अभियान चलाया गया । आस-पास की जनता एवं विद्यार्थियों को व्यसनों से होनेवाली हानियाँ बतायी गयीं, उनसे व्यसन छोड़ने का संकल्प करवाया गया, साथ ही व्यसन छोड़ने हेतु औषधि का निःशुल्क वितरण किया गया । व्यसनों के प्रतीकात्मक पुतले भी जलाये गये ।

जिला चिकित्सालय पौड़ी (उत्तराखण्ड) के शल्यकक्ष में व्यसनमुक्ति पोस्टर लगाये गये ।

जमुना(कालरी) जि. अनूपपुर (म.प्र.) व चिरमिरी जि. कोरिया (छ.ग.) में लोगों को व्यसनों की हानियों से अवगत कराया गया, परिणामस्वरूप भारी संख्या में लोगों ने व्यसन छोड़ने का शुभ संकल्प लिया । चिरमिरी में 'नशामुक्ति सप्ताह' मनाया गया, जिसके अंतर्गत खदानों के मजदूरों को एकत्र कर उन्हें व्यसनों से सावधान किया गया व 'नशे से सावधान' पुस्तक बाँटी गयी ।

राजा का तालाब जि. काँगड़ा (हि.प्र.) में विद्यार्थियों को व्यसनों की हानियों से सचेत किया गया । उन्हें जीवन-विकास की यौगिक युक्तियाँ बतायी गयीं और उनमें 'युवाधन सुरक्षा' पुस्तक का वितरण भी किया गया ।

✾ अस्पतालों में फल एवं सत्साहित्य वितरण ✾

भरूच (गुज.), हमीरपुर (उ.प्र.) के अस्पतालों में फल एवं सत्साहित्य का निःशुल्क वितरण किया गया ।

✾ नोटबुक-वितरण ✾

तरसाली जि. बड़ौदा (गुज.), ओझरमिग जि. नासिक (महा.) के स्कूली बच्चों में सुवाक्ययुक्त नोटबुकों का निःशुल्क वितरण किया गया ।

✾ विविध सेवाकार्य ✾

अमरावती (महा.) के 'संत गाडगे वृद्धाश्रम' में प्रसाद व सत्साहित्य वितरित किया गया ।

भिलाई जि. दुर्ग (छ.ग.) के केन्द्रीय कारागार में सत्साहित्य बाँटा गया ।

लठियाणी जि. ऊना (हि.प्र.) में निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया गया व 'युवा जागृति कार्यक्रम' किया गया ।

आरा जि. भोजपुर (बिहार) में रेलवे स्टेशन पर सत्साहित्य का निःशुल्क वितरण किया गया ।

सिहोर (म.प्र.) में पूज्य बापूजी के 'आत्मसाक्षात्कार दिवस' के निमित्त विद्यालय के बच्चों में प्रसाद व 'बाल संस्कार' पुस्तक बाँटी गयी ।

'संत श्री आसारामजी आश्रम, दिल्ली' के तत्त्वावधान में वहाँ के तिहाड़ जेल में दिनांक ५ से ७ नवम्बर २००७ तक (शेष पृष्ठ १६ पर)

भि

श्री योग वेदांत सेवा समिति के पदाधिकारियों हेतु आवश्यक सूचना

आपके नगर में समिति की रचना जब से हुई, तब से जितने भी अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष ने सेवा दी, वे सभी यह फार्म भर के ३१-१२-२००७ तक **'अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति कार्यालय, अमदावाद आश्रम'** में भेजें ।

नवीनतम रंगीन पासपोर्ट साइज फोटो

श्री योग वेदांत सेवा समिति..

जि. :...................................... राज्य :..................................

नाम :...

वर्तमान/पूर्व में पद :...

कब से.................................. कब तक ....

नजदीक के किस आश्रम से जुड़े हैं ?..........................दीक्षा कब ली ? ....

मौनमंदिर/अनुष्ठान कितने ?.............................. शिविर कितने भरे ? ....

परिवार में पूज्य बापूजी से दीक्षा किस-किसने ली ?..

आपके परिवार से कोई व्यक्ति आश्रम में समर्पित है तो उसका विवरण ....

क्या आपने पूज्य बापूजी के पूनम दर्शन अथवा स्थानीय आश्रम में पूनम दर्शन का व्रत लिया है ? .... यदि हाँ तो विवरण दें ....

शैक्षणिक योग्यता : ....

वर्तमान घर का पता :...

....

फोन/मोबाइल : .... ई-मेल :...

वर्तमान व्यवसाय :..

वर्तमान व्यवसाय का पता :..

फोन/मोबाइल : .... ई-मेल :...

२००८ से अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष पद की नियुक्ति 'अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति कार्यालय, अमदावाद' द्वारा होगी ।

नोट : उपरोक्त प्रारूप अनुसार पूर्ण व विस्तृत जानकारी अलग पृष्ठ पर लिखकर भेजें ।

कम्प्यूटर, टीवी. ज्यादा देखने से मिर्गी का खतरा

चीन की युवा पीढ़ी में कम्प्यूटर और टीवी. के ज्यादा इस्तेमाल से एक नयी किस्म की मिर्गी के लक्षण देखे जा रहे हैं । इसे चिकित्सकों ने 'फोटोसैंसेटिव एपिलैप्सी' नाम दिया है।

पेंकिंग विश्वविद्यालय के प्राध्यापक क्विन जियोंग ने कहा कि विडियो गेम खेलने और टीवी. देखनेवाले लोग स्क्रीन पर रोशनी की पल-पल बदलती तीव्रता के कारण इस रोग का शिकार हो रहे हैं। आँकड़ों के अनुसार चीन में साठ लाख लोग मिर्गी के शिकार हैं। इनमें से पाँच प्रतिशत 'फोटोसैंसेटिव एपिलैप्सी' की चपेट में आ गये हैं। चिकित्सकों के अनुसार मिर्गी के मरीजों को टेलीविजन का प्रयोग बंद या अति कम करना चाहिए ।

अनर्थकारी लोगों के साथ कभी भी संगति नहीं करनी चाहिए ।

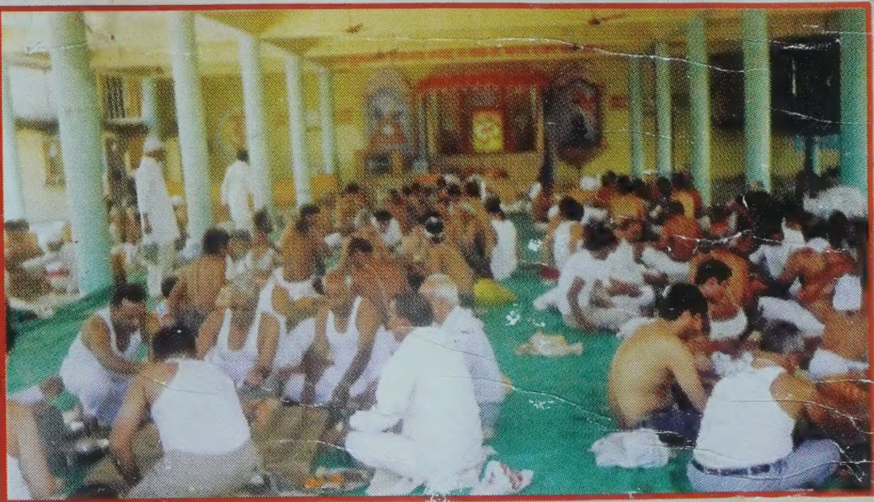


संकीर्तन यात्रा, मुजफ्फरपुर (बिहार)



पूज्य बापूजी के आत्मसाक्षात्कार दिवस पर सत्संग व कीर्तन के बाद विश्वमंगल के संकल्प के साथ कन्दरोडी जि.कांगड़ा (हि.प्र.). के साधकों ने किया सामूहिक हवन ।





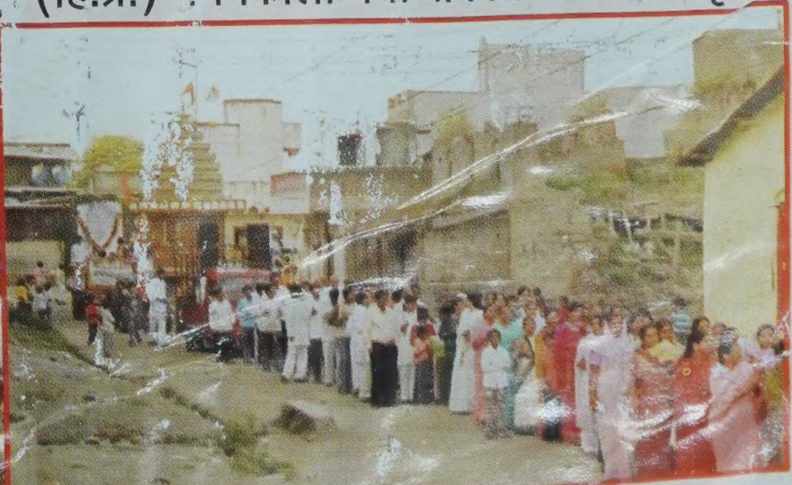
अपने पितरों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए सर्वपितृ अमावस्या के दिन सामूहिक श्राद्ध एवं तर्पण करते रायपुर (छ.ग.) तथा हरिद्वार (उत्तराखण्ड) के श्रद्धालु ।





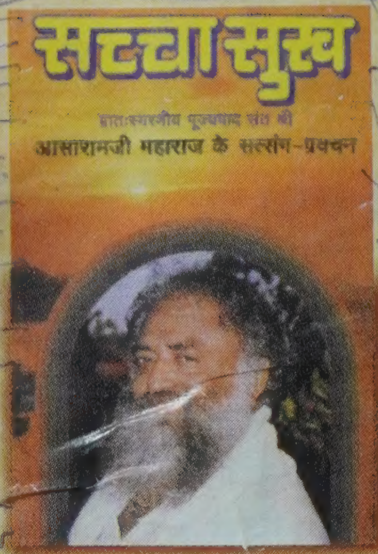
पूज्य बापूजी के आत्मसाक्षात्कार दिवस के उपलक्ष्य में गरीबों में अन्न, दक्षिणादि वितरित करते वलसाड (गुज.) के साधक तथा बडसर, जि. हमीरपुर (हि.प्र.) में निकाली गयी संकीर्तन यात्रा का दृश्य ।

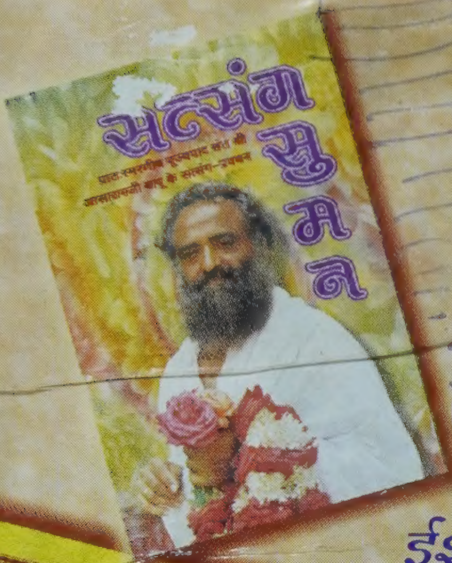


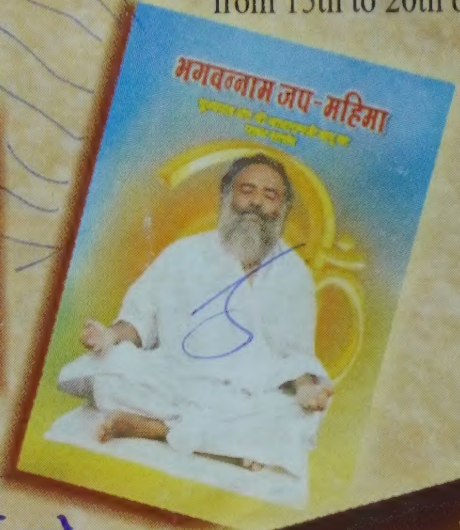


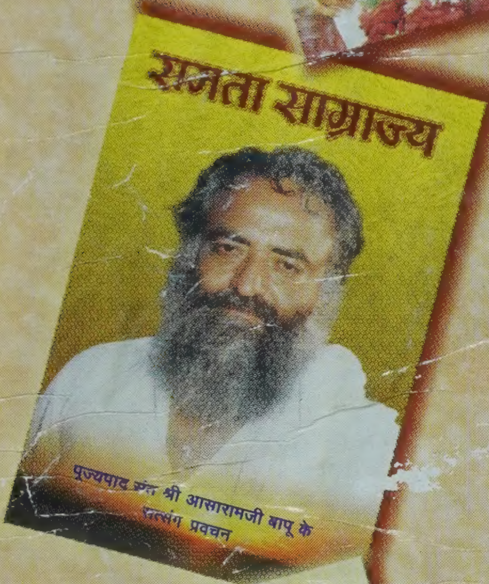
भिवंडी, मुंबई (महा.) तथा लासलगाँव, जि. नासिक (महा.) में निकाली गयी संकीर्तन यात्राएँ।

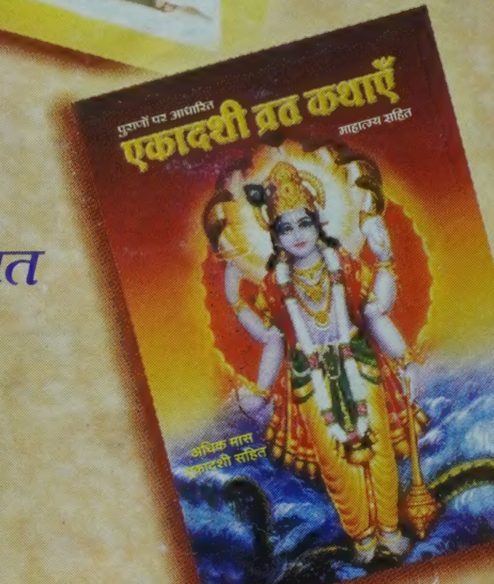
RNP No. GAMC-1253-A/200
RNI No.66693/97
LWPP No.GUJ/279/06-08
Permitted to post at AHD-PSO
from 15th to 20th of E.M.











ईश्वरप्राप्ति के मार्ग को सुगम बनानेवाला, सुखी, स्वस्थ और सम्मानित जीवन की कुंजियाँ बतानेवाला पूज्यश्री का प्रेरणादायी सत्साहित्य अवश्य पढ़ें।

१० पुस्तकों का मूल्य
डाकखर्च सहित : मात्र रु. १००/-

मनीऑर्डर/डी.डी. भेजकर रजिस्टर्ड पोस्ट पार्सल से भी प्राप्त कर सकते हैं।

✻ सत्साहित्य विभाग ✻
संत श्री आसारामजी आश्रम,
साबरमती, अमदावाद-५.

